मनुष्य को अपना स्वरूप पहचानना चाहिये

“एक बार अकबर और बीरबल कहीं जा रहे थे। मार्ग में एक ब्राह्मण भिक्षा माँगता हुआ मिला। उसे देखकर अकबर बोला “देखो बीरबल तुम्हारी जाति तो भीख माँगने वाली है”। बीरबल ने उत्तर दिया “महाराज इसने अपने स्वरूप को नहीं पहचाना है। जब यह अपना स्वरूप पहचान जायेगा तो ऐसा काम नहीं करेगा”।

ऐसा कहकर बीरबल ने उसे अपने पास बुलाया और कहा, “मैं तुम्हें पाँच रुपये दिया करूँगा, तुम प्रतिदिन एक हजार गायत्री जपो”। ब्राह्मण प्रतिदिन एक हजार गायत्री जपने लगा। कुछ दिन में उसका मन कुछ शुद्ध हुआ और उसने सोचा “अब मैं गायत्री अपने लिये ही जपा करूँगा”। उसने बीरबल से रुपये लेना बंद कर दिया। बीरबल ने उसे दस रुपये देकर दो हजार गायत्री का जप करवाना चाहा, किंतु उसे भी उसने स्वीकार नहीं किया, और घर छोड़कर तपस्या करने चला गया।

तपस्या पूरी करके वह महान साधू बनकर दिल्ली लौट आया। धीरे-धीरे उसकी ख्याति बढ़ी। अनेक लोग उसके दर्शनों को आने लगे। अकबर भी उसकी सेवा में बहुत सी भेट लेकर उपस्थित हुआ, परंतु साधु ने अकबर की ओर देखा भी नहीं, और न उसकी भेट ही स्वीकार की। अकबर ने बीरबल से कहा “यह कैसा साधू है”? बीरबल ने उत्तर दिया “महाराज यह वही भिखारी है, परंतु अब यह अपने स्वरूप को पहचान गया है।”

यह कहानी सुनाने के बाद श्री महाराज जी ने समझाया कि मनुष्य को अपना स्वरूप पहचानने का प्रयत्न करना चाहिये, तभी उसे ज्ञान उत्पन्न होता है और वह जीव से ब्रह्म बनता है।

बोलो हर-हर महादेव